व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की रचनात्मक त्रैमासिकी

वर्ष : 19 अंक : 76

जुलाई-सितम्बर : 2023

परसाई की प्रासंगिकता

त्रिकोणीय में विनोद साव पर
ज्ञान चतुर्वेदी, प्रेम जनमेजय
कैलाश मण्डलेकर, रमाकांत श्रीवास्तव।
राजशेखर चौबे से संवाद

इस अंक में-

विश्वनाथ त्रिपाठी, विजयबहादुर सिंह, सूर्यबाला, ज्ञान चतुर्वेदी, सेवाराम त्रिपाठी, दिविक रमेश, नरेंद्र पुंडरीक, विष्णु नागर, अशान्त बाराबंकवी, श्रीकांत चौधरी, हरीश नवल, राकेश कुमार, तरसेम गुजराल, राजेंद्र सहगल, पिलकेंद्र अरोड़ा, अनूपमणि त्रिपाठी, मलय जैन, कमलेश पांडेय, लालित्य ललित, रणविजय राव

मूल्य ₹ 20

‘व्यंग्य यात्रा’ के शुभचिंतकों को सम्मान /पुरस्कार की हार्दिक बधाई!

राजेश जोशी को ‘परिवार सम्मान’, अरुण कमल को ‘निराला स्मृति सम्मान’, संतोष चौबे को ‘वातायान अंतरराष्ट्रीय शिखर सम्मान-2023’, सत्रहवाँ ‘उदयराज सिंह स्मृति सम्मान’ माधव कौशिक को। राकेश शर्मा, पंकज चौधरी एवं दीर्घनारायण को ‘नई धारा रचना सम्मान’।

प्रताप सहगल को संगीत नाटक अकादमी अमृत सम्मान, चंदन पांडेय को स्वयंप्रकाश स्मृति सम्मान, विश्व मैत्री मंच का परसाई सम्मान लालित्य ललित और महादेवी सम्मान संजीव कुमार को।

सुशील भारती को सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन सम्मान-2023, शैलेंद्र कुमार शर्मा को शिवमंगलसिंह सुमन सारस्वत सम्मान, प्रेम विज को प्रभा शुक्ल सम्मान।

जबलपुर शिकोहाबाद और भिलाई में परसाई जन्मशति आयोजन। वशिष्ठ अनूप के संकलन का लोकार्पण ‘व्यंग्यम्’ के मंच पर ‘डांस इंडिया डांस’ और ‘सींगवाले गधे’ पर चर्चा

व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की

रचनात्मक त्रैमासिकी

जुलाई-सितंबर 2023

वर्ष-19 अंक-76

एक अंक : 20 रुपए

पांच अंक : सौ रुपए

डिजिटल रूप में NotNul पर उपलब्ध

neelabhsrivastav@gmail.com

सहयोग राशि 'व्यंग्य यात्रा' के नाम से ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक

प्रेम जनमेजय

73, साक्षर अपार्टमेंट्स
ए-3 पश्चिम विहार
नई दिल्ली-110063

फोन : 011-470233944
मोबाइल : +91-9811154440

ई-मेल-
yatravyangya2004@gmail.com
premjanmejai@gmail.com

आवरण : विज्ञान व्रत की कलाकृति पर आधारित

रेखाचित्र : विज्ञान व्रत
संदीप राशिनकर

कानूनी सलाहकार (अवैतनिक)
एडवोकेट कुलदीप आहूजा
उच्च न्यायालय

प्रबंध सहयोग
राम विलास शास्त्री
मोबाइल : +91-9911077754
+91-8920111592

'व्यंग्य यात्रा' में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। विवादास्पद मामले दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे। संपादन एवं संचालन पूर्णत: अवैतनिक और अव्यावसायिक।

अनुक्रम

आरंभ 1-3

चंदन धिरें 4-8

पाथेय 9-12

रवींद्रनाथ त्यागी- पूरब खिले पलाश 9

सुभाष काबरा- ...बहुत काम आ रहे हो शरद जी
संजीव निगम...एक श्रद्धांजली ऐसी भी

पुष्पा भारती- जनम जनम के पार 12

चिंतन 13-70

परसाई की प्रासंगिकता संवाद-विमर्श:

विश्वनाथ त्रिपाठी- परसाई का लेखन सकारात्मक मिशन है 13

विजयबहादुर सिंह- अपनी निगाह में परसाई 16

ज्ञान चतुर्वेदी- परसाई को अप्रासंगिक बताने का खेल 19

सूर्यबाला- ...वही परसाई होता है... 22

सेवाराम त्रिपाठी- हरिशंकर परसाई की प्रासंगिकता के मायने 23

प्रेम जनमेजय- जमीनी विसंगतियों पर शाश्वत दृष्टि 30

हरीश नवल- परसाई : प्रासंगिकता के सूत्र 34

राकेश कुमार- 'मैं कैसे सुलह करूं कत्ल करने वालों से' 36

जवाहर चौधरी- ...याद करते हुए देशकाल 41

तरसेम गुजराल- सीधी लकीर खींचना सबसे मुश्किल 43

सूर्यकांत नागर- परसाई आज भी जीवित और सक्रिय हैं 48

श्रीकांत चौधरी- ...सतयुग के आने तक! 49

देवेंद्र गुप्ता- परसाई की दृष्टि सीमित नहीं है 52

राजेन्द्र सहगल- आज का समय और परसाई 56

राकेश अचल- हरिशंकर परसाई यानि व्यंग्य की पनही 61

प्रभात गोस्वामी- 21वीं सदी में भी पताका फहरा रही है 63

पिलकेन्द्र अरोरा- परसाई ने 'सत्य' को रेखांकित किया है 64

सुधा कुमारी- विवेक और विज्ञान सम्मत दृष्टि... 66

रणविजय राव- परसाई : जिन्होंने मुझे सबसे ज्यादा... 67

त्रिकोणीय 71-86

विनोद साव- परिचय 71

प्रेम जनमेजय- विनोद साव : एक एक्सीडेंटल व्यंग्यकार 72

आत्मकथ्य- गलत जनरलाइजेशन के खिलाफ... 73

विनोद साव की व्यंग्य रचनाएं

हारने वाले उम्मीदवार की तलाश, मुख्य अतिथि प्रशिक्षण संस्थान, मिलना केमेस्ट्री का

साक्षात्कार- व्यंग्य हिन्दी साहित्य का एक नवोन्मेष है 79
विनोद साव से राजशेखर चौबे का संवाद

ज्ञान चतुर्वेदी- जायज उम्मीदों के साथ 82

कैलाश मंडलेकर- व्यंग्य उपन्यासों में भोंगपुर 30 कि.मी. 83

रमाकांत श्रीवास्तव- कथा कथन की शैली में ग्रामीण जीवन 85

गद्य व्यंग्य 87-102

अनूपमणि त्रिपाठी- परसाई की टूटी टांग 87

माता के लाल, शहर की कहानी, माटी, सिंहावलोकन 90

मलय जै 91

प्रभाशंकर उपाध्याय- क्या सुबह थी? क्या समां था? 93

कमलेश पाण्डेय- अथ विवाह अर्थपदी 94

लियाकत खोखर 'साहिल'- कथा कार्तिक 95

सूरत ठाकुर- मामा बनाने की कला 97

राजेंद्र मोहन- शर्मा हर रंग उनके आगे फीका 98

भूपेन्द्र भारतीय- मुँह काला कराना एक कला 99

प्रियदर्शी खैरा- जनसेवा का कीड़ा 100

राजेश ओझा- मातृ दिवस, काला कोट 101

संदीप कुमार सिंह- मंत्री जी की भैंसे 102

पद्य व्यंग्य 103-108

नरेन्द्र पुण्डरीक- स्टेच्यू, समय की उंगलियों में फंसी काली रातों में चमकें 103

विष्णु नागर- स्वर्गीय कवि 104

विवेक निराला- ऊधौ! कहाँ हमारे जूते। 104

अशान्त बाराबंकवी- औरतें 105

दिविक रमेश- आप कौन हैं- चलता हूँ सर 106

सोमदत्त शर्मा- अमृतकाल 106

लालित्य ललित- मिली-भगत 107

ओम प्रकाश शर्मा 'प्रकाश'- गणतंत्र 107

विनोद पराशर- दंगा, ताजा अखबार, भिखारी, कुत्ते 107

विनोद दुबे- प्रेमचंद 108

इधर जो मैंने पढ़ा- 109-116

विवेक रंजन श्रीवास्तव- परसाई की टीम के... 109

जवाहर चौधरी- संस्मरणों के सहारे पड़ताल... 110

डॉ. आशा कुमारी- हिमप्रदेश की यथार्थपरक... 112

डॉ. पिलकेन्द्र अरोरा- मूल्यों से 'दोस्ती' और... 113

प्रभात गोस्वामी- समय की नब्ज टटोलते व्यंग्य 114

सुनील सक्सेना- वाह से आह तक 115

सूचनार्थ पुस्तकें 116

समाचार 117-120

अब आप

आर.टी.जी.एस.

द्वारा 'व्यंग्य यात्रा' को अपना आर्थिक सहयोग दे सकते हैं।

खाताधारक का नाम : व्यंग्य यात्रा
बैंक का नाम : केनेरा बैंक
शाखा- पश्चिम विहार, ए-ब्लाक
खाता संख्या : 3223201000092
IFSC Code : CNRB0003223

आरंभ

पिछले दिनों मैंने जबलपुर में 'व्यंग्यम्' द्वारा आयोजित परसाई जन्मशति समारोह में कहा था कि व्यंग्य मेरे लेखन की मातृभाषा है और परसाई के कारण जबलपुर को मैं व्यंग्य की जन्मभूमि मानता हूं। इन दिनों उन्हीं परसाई की जन्मशति केवल व्यंग्यकार नहीं अन्य विधाओं के रचनाधर्मी भी मना रहे हैं। हिंदी व्यंग्य जिस पर बात करने से गंभीर आलोचक किनारा करते थे, उसे उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे, अब परसाई की जन्मशति के बहाने व्यंग्य पर बात कर रहे हैं। व्यंग्य को इसी व्यापक दृष्टि की आवश्यकता है। परसाई पर जितना हम बात करते हैं उतने ही समृद्ध होते हैं। बिहारी ने कहा है ज्यों ज्यों बूड़े श्याम रंग त्यों त्यों उजलो होई...ज्यों ज्यों बूड़े परसाई रंग त्यो त्यों समृद्ध होईं।

परसाई विरोध को जीते थे। वह महानता की श्रद्धा ओढ़कर नपुसंक नहीं होना चाहते थे। वे श्रद्धेय होने की भयावहता समझते थे। तभी तो वे अपने श्रद्धालुओं से कहते हैं– "यह चरण छूने का मौसम नहीं है, लात मारने का मौसम है। मारो एक लात हो और क्रांतिकारी हो जाओ।" इसलिए सावधानी बरतनी होगी कि हम परसाई नाम का चंदन न घिसें अपितु उनके लिखे को बेबाकी से घिसें और समृद्ध हों।

परसाई पर केंद्रित अंक 'व्यंग्य यात्रा' ने दो अंक निकाले थे- एक 176 का पृष्ठ का था तो दूसरा 196 पृष्ठ का। इस अंक में परसाई की प्रासंगिकता को लेकर चिंतन की सामग्री दी गई है। परसाई को आज भी याद करने के कारण ढूंढे गए हैं और सवाल भी कि परसाई कितने प्रासंगिक हैं। प्रसन्नता है कि अनेक प्रतिष्ठित आलोचकों ने, मेरे आग्रह को स्वीकार किया, हिंदी व्यंग्य के कोने में झांका और परसाई के एक नए पक्ष को अपने विचारों से समृद्ध किया।

'व्यंग्य यात्रा' यू ट्यूब मासिकी'

परसाई के जन्म दिन पर ही मैंने पहली यू टयूब पत्रिका 'व्यंग्य यात्रा यू ट्यूब मासिकी' की फेसबुक पर घोषणा की थी।

व्यंग्य यात्रा इस अंक के साथ उन्नीस वर्ष की हो गई है। अपने शुभचिंतकों एवं सहयात्रियों की शुभकामनाओं के सुदृढ़ आधार पर ही पिछले उन्नीस वर्षों से 'व्यंग्य यात्रा' निरंतर है। अपनी मिशनरी सोच के साथ 'व्यंग्य यात्रा' ने हिंदी साहित्य में अपनी आवश्यक भूमिका निभाई है। यह पत्रिका एक सामूहिक एवं खुली सोच का परिणाम है। उन्नीस वर्ष से, निर्बाध गति से चल रही इस यात्रा की रीढ़ की हड्डी इसके शुभचिंतक सहयात्री हैं।

'व्यंग्य यात्रा' का जन्म 21वीं सदी में हुआ था। 21वीं सदी का 19 वर्षीय युवामन चांद की सतह की हकीकत जानता है, उसे छूना भर नहीं जानता। वह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में पारंगत हो रहा है। हथेली की गिरफ्त में मोबाईल ने उसका 'वसुधैव कुटुंब' निर्मित किया है। फेसबुक, व्हाट्सऐप, ट्यूटर, इंस्टा आदि ने उसे बेहद 'बिजी' किया है, 'ज्ञानवान' किया है। 21वीं में जगमगाने वाले युवा स्वर 'व्यंग्य यात्रा' से जुड़ते हैं और इसका अहम हिस्सा बनते हैं तो वह अनुभव मेरे लिए गूंगे का गुड़ है। उनकी सोच, एप्रोच, गति, प्रगति आदि एक धावक जैसे हैं। उनका अद्भुत तकनीकी ज्ञान हमें पिछड़ा वर्ग में डाल देता है जहां कोई आरक्षण नहीं। मेरी 13 वर्षीय पोती और पंद्रह वर्षीय पोते का आधुनिक तकनीक संपन्न ज्ञान मुझे निरंतर बौनेपन का अहसास देता है। वे मेरी पत्रिका को आधुनिक करने के वाले मेरे परामर्शदाता हैं। 'व्यंग्य यात्रा यू-ट्यूब मासिकी' मेरे परिवार के युवा स्वर के दबाव का परिणाम है। पिछले दो महीने से विभिन्न तकनीकों पर काम करते हुए मैं भी काफी ज्ञानी हो गया हूं।

एक समय था जब दृश्य माध्यम के रूप में केवल दूरदर्शन और फिल्में थीं। तब दूरदर्शन के कार्यक्रमों में साहित्य की बड़ी हिस्सेदारी रहती थी। 'पत्रिका' जैसे कार्यक्रम मेरी पीढ़ी के लोगों को रचनात्मक सुख देते थे। कुबेरदत्त के समय की सक्रियता और अंत मे अमरनाथ अमर का समय...। जैसे-जैसे चैनल बढ़े साहित्य के हिस्सेदारी कम होती हुई और अंततः शून्य हो गई। इसी अभाव को पाटने के लिए यू-ट्यूब पत्रिका की कुल्हाड़ी आपने लेखन के पांव पर मारने का दैवीय विचार आया। चाय चर्चा में परिवार की युवा पीढ़ी के साथ इसकी अवधारणा साझा की तो सबने झाड़ पर चढ़ा दिया। एक नया इतिहास रचने जैसा भ्रमजाल उत्पन्न हुआ। 'व्यंग्य यात्रा' छपने के साथ-साथ दृश्य माध्यम का भी हिस्सा मिले और सचमुच इक्कीसवीं सदी में होने का संतोष प्राप्त करे इसलिए 'व्यंग्य यात्रा यू-ट्यूब मासिकी' के जन्म के प्रयत्न चालू हुए।

'व्यंग्य यात्रा' का 'आंरभ' से मकसद सार्थक व्यंग्य को एक वृहद् परिप्रेक्ष्य में देखना और व्यापक प्लेटफार्म देना रहा है। मेरा मानना है कि सभी सजग रचनाकारों की दृष्टि सामाजिक विडंबनाओं और विषमताओं पर रहती है। पर तथाकथित व्यंग्यकारों ने व्यंग्य को जिस तरह से कुंआ बना लिया है उसमें व्यापक दृष्टि का रचनाकार झांकने से डरता है। वह तो आसपास भी नहीं फटकना चाहता है। उसे भय रहता है कि उस पर 'हास्य-व्यंग्यकार का लेबिल चिपकाकर उसे सीमित न कर दिया जाए। कबीर से आंरभ हुई व्यंग्य की धारा ने उबड़-खाबड़ राहों पर चलती एक नदी का रूप धारण किया। पर आज यह एक कुएं में सिमटती जा रही है। 'व्यंग्य यात्रा' ने किसी भी चुनौती के समक्ष घुटने नहीं टेके हैं। उसने भिक्षुक बनना स्वीकार किया पर एक आत्मस्वाभिमान के साथ। व्यंग्य-विमर्श मंच को विकसित करने, देश के विभिन्न कोनों में व्यंग्य चेतना के विकास, युवा पीढ़ी के लिए कार्यशाला आयोजन, एवं साहित्य उपेक्षित स्थानीय रचनाकारों तक पहुंचने के लिए 'व्यंग्य यात्रा' ने परसाई की नगरी जबलपुर में, 'कहानी मंच' के सहयोग से 13 अप्रैल 2015 को 'हरिशकर परसाई की परंपरा में व्यंग्य आज' विषय को केंद्र में रखकर पहले शिविर का आयोजन किया था। अब तक 'व्यंग्य यात्रा' साहित्य अकादेमी दिल्ली, मुबई विश्वविद्यालय, गोवा, अहमदाबाद, डलहौजी, कुल्लू, श्रीगंगानगर, बिलासपुर, रायपुर, आगरा, नगपुरा, आदि में अपने शिविर आयोजित कर चुकी है।

व्यंग्य यात्रा को निरंतर आपका सहयोग मिला है और आशा है कि व्यंग्य यात्रा यू-ट्यूब मासिकी को भी मिलेगा। यू-ट्यूब का यह वैश्विक मंच हिंदी व्यंग्य को एक नई जमीन देगा। 'व्यंग्य यात्रा' चाहे उन्नीस बरस

की है पर व्यंग्य यात्रा यू-ट्यूब मासिकी तो अभी शिशु है। ठीक से तुतला भी न पाने की स्थिति में। न चलने की तकनीक से वाफिक और न चलाने की। शिशु के पहले कदम को अभूतपूर्व साथ मिला है। प्रवेशांक में रामदरश मिश्र, विश्वनाथ त्रिपाठी विजय बहादुर सिंह, सूर्यबाला, ज्ञान चतुर्वेदी, प्रिय दर्शन, दिविक रमेश, बलराम, सुभाष राय, यश मालवीय, ओम निश्चल, गिरीश पंकज, हरीश नवल, सुभाष चन्दर, राकेश कुमार, श्रीकांत चौधरी, पंकज सुबीर, दिलीप तैतरवे, संजीव कुमार, बुलाकी शर्मा एवं अर्चना चतुर्वेदी, पिलकेंद्र अरोड़ा, तरसेम गुजराल, लालित्य ललित, सोमदत्त शर्मा, अशोक अंजुम, दीपक सरीन, राजेश ओझा सुरेश कुमार मिश्र उरतृप्त आदि का सहयोग मिला। 600 के लगभग पत्रिका प्रमियों ने इसे यू-ट्यूब पर देखा। फेसबुक पर पुष्पा भारती, ममता कालिया, विश्वनाथ सचदेव आदि सैकड़ों ने इसे शुभकामनाएं दीं। यह सब पूरी टीम के सहयोग से संभव हुआ।

आज मुझे 19 वर्ष पूर्व 2014 के अगस्त का आरंभ याद आ रहा है। जैसे लालटेनी पीढ़ी के समय में, लड़की के विवाह को लेकर चिंताएं भ्रष्टाचार की तरह शाश्वत रहती थीं वैसा ही चिंताओं ने मुझे घेरा हुआ था। मेरी चिंता थी कि दिसंबर 2003 में मैंने, अपने लेखन की नाव को रेत में डाल व्यंग्य विमर्श के सूखे को कुछ समाप्त करने के लिए 'व्यंग्य यात्रा' जैसी पत्रिका का जो वायदा किया है, वह चुनावी वायदा न हो। जनवरी 2004 में मैंने नववर्ष की शुभकामनाएं देने के बहाने से अनेक व्यंग्य शुभचिंतकों को 'व्यंग्य यात्रा' की शुभ इच्छा के लिए पत्र लिखा था।

एक रचनाकार संपादक की सूली पर चढ़ गया। पहले ही अंक में व्यंग्य के मनोविज्ञान को लेकर आलेखों की याचना कर डाली। प्रवेशांक अक्टूबर -दिंसबर 2004 में निकालने का तय कर लिया और निकाला। इसका लोकार्पण 29 अक्टूबर 2004 को हिंदी भवन में हुआ। लोकार्पण निर्मला जैन, नरेंद्र कोहली, सुधीश पचौरी, विष्णु नागर, दिविक रमेश और गोविंद व्यास ने किया था। इन सबसे प्रवेशांक लोकार्पित करने के पीछे मेरा मकसद था कि व्यंग्य यात्रा के खुले मंच और और सामग्री का प्रतीक सामने आये। अच्छा लगा जब इन सबने, अपने तमाम विरोधों के मध्य मेरे आग्रह को मानकर एक साथ मंच पर आना स्वीकार किया। अच्छा लगा कि अंक देखकर नामवर सिंह ने कहा कि प्रेम अच्छा लगा देखकर कि तुम हास्य व्यंग्य के नाम पर भंड़ैती नहीं कर रहे है।

जिस उद्देश्य से 'व्यंग्य यात्रा' की सोच, अग्रजों, सहयात्रियों एवं युवा मित्रों के साथ विचार-विमर्श कर आंरभ की थी, उस उद्देश्य ने आकार ले लिया। पहले ही अंक में व्यंग्य के मनोविज्ञान और दूसरे अंक में व्यंग्य के मिथकीय प्रयोगों जैसे विषयों पर आलेखों का आग्रह तो किया था, पर एक अविश्वास के साथ। आशा नहीं थी कि इस विषय पर आलेख उपलब्ध होंगे, पर हुए और संतुष्टि मिली। व्यंग्य यात्रा ने जब भी व्यंग्य विमर्श से जुड़े नए विषयों पर लेखन की चुनौती दी तो व्यंग्य-विचारकों और विशेषकर युवा विचारकों ने सहर्ष स्वीकार किया। यही नहीं अन्य विधाओं के अनेक शीर्ष रचनाकारों ने प्रसन्नता से अपना रचनात्मक सहयोग दिया। विमर्श के अनेक विषयों-व्यंग्य कविता हाशिए पर क्यों, व्यंग्य का सौंदर्यशास्त्र, विविध विधाओं में आवाजाही, व्यंग्य आलोचना का परिदृश्य, व्यंग्य नाट्यराग, व्यंग्य और आज का समय, व्यंग्य का शिल्प विधान व्यंग्य लेखन और कार्टूनकला आदि के कारण ही व्यंग्य यात्रा मुठभेड़ का मंच बना हुआ है।

19 वर्ष बाद आज मैं संतुष्ट हूं, पर पूरा संतुष्ट नहीं क्योंकि जिस दिन पूरा संतुष्ट हो जाऊंगा 'व्यंग्य यात्रा' बंद कर दूंगा।

पहले अंक की 500 प्रतियां प्रकाशित हुई थीं जो आज भी कुछ शेष हैं। आज हर अंक की औसत 2000 प्रतियां प्रकाशित होती हैं। नॉटनल पर डिजटली, अनेक को पीडीएफ भेजने के बावजूद कम पड़ जाती हैं। 96 पृष्ठ की 'व्यंग्य यात्रा' के प्रवेशांक का मूल्य बीस रुपए था और श्रीलाल शुक्ल, परसाई केंद्रित हिंदी व्यंग्य में नारी स्वर आदि दो सौ पृष्ठ के लगभग विशेषांकों का मूल्य भी बीस रुपए रहा। क्योंकि यह मिशनरी पत्रिका है। पाठकों का इसे प्यार मिल रहा है। अंक न मिले तो शिकायतो के व्हाट्सऐप की बाढ़ आ जाती है। जिसे मिलती है वह इसे पढ़कर, फेसबुक पर अपनी विस्तृत टिप्पणी के साथ साझा करता है।

भिक्षाम् देहि...आभार

आपकी शुभकामनाओं एवं भिक्षा के बल पर प्राण वायु ग्रहण कर रही 'व्यंग्य यात्रा' के सभी दिन अच्छे दिन से ही हैं। इसका शुभ चाहने कोई चुनावी शुभ का वायदा नहीं करते हैं अपितु बिना वायदे के शुभ चाहते हैं। 'व्यंग्य यात्रा' की अर्थव्यवस्था अपने शुभचिंतक भिक्षा प्रदाताओं के कारण चिंताजनक नहीं है। हम आभारी हैं- अतुल चतुर्वेदी, ऋषभ जैन, सुभाष काबरा, श्रीकांत चौधरी, सुरेश कुमार, विनोद ठाकुर, संदीप कुमार, देवेंद्र त्यागी, इंदु झुनझुनवाला आदि के। आदि में वे लोग सम्मिलित हैं जो भिक्षा देते हुए शर्त रखते हैं कि उनका नामोल्लेख नहीं किया जाएगा।

संतुष्टि होती है कि हिंदी व्यंग्य न केवल लेखन की दृष्टि से अपितु विमर्श की दृष्टि से विकसित हो रहा है। अच्छा लगता है देखकर कि व्यंग्य अनेक ऐसे अंधेरे कोनों में पसर रहा है जिस दिशा में जाना दूसरी विधा वाले वर्जित मानते थे। धीरे-धीरे नवजात शिशु-सी 'व्यंग्य यात्रा' के पालन पोषण में जुटे अनेक हाथों के कारण उन्नीस वर्षीय यात्रा ने केवल सुगम हुई अपितु व्यंग्य के बढ़ते कारवां में सार्थक हिंदी व्यंग्य की चिंता करने वाले चिंतक इस मंच पर एक साथ वैसे ही जुटे जैसे कभी आश्रमों में ऋषि चिंतन किया करते थे। व्यंग्य की यह यात्रा अनेक उबड़ खाबड़ मार्गों में पगडंडियों का निर्माण करते हुए चल रही है। सहयात्रियों ने अपनी-अपनी कुदालों के साथ सम्मिलित हो, श्रमदान से, इस यात्रा के लिए मार्ग कर निर्माण किया है। पत्रिका के साधन सीमित हैं और संपादक की कार्यक्षमता उससे अधिक सीमित है। अभी भी मार्ग में अनेक कांटे हैं, उबड़-खाबड़ रास्ते हैं तथा सांप बिच्छुओं जैसे जीवों की चुनौतियां हैं। पर विभिन्न विधाओं के शुभचिंतकों के मनोवांछित सहयोग के कारण, अपने लेखकीय दबाव, आर्थिक विवशताओं, घरेलू व्यस्तताओं के होते हुए भी चाहकर भी 'व्यंग्य यात्रा' बंद नहीं कर पाया।